DR Krishnadeo Kumar bharti
Assistant professor (G.T)
Dept of Political science
C.M.J.College Donwarihat
Khutauna, Madhubani.
Email -Kdkbharti08@gmail.com
Mo.No-9234999361
B.A Part-3 Date--15-07-2020

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के परम्पावादी दृष्टिकोण की विवेचना करें।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के परम्पावादी दृष्टिकोण का आधार दर्शन, इतिहास और कानून है।यह इतिहास को एक ऐसी प्रयोगशाला के रूप में देखता है, जिससे वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विश्लेषण एवम् परीक्षण होता रहता है।इतिहास मानवीय प्रयोगों का भण्डार है जिससे शिक्षा लेकर समकालीन त्रुटियों को सुधारा जा सकता है।इतिहास का अध्ययन तथ्य ज्ञान एवम् सायन्यीकरण की परीक्षा करने के साधन के अतिरिक्त विचार क्षितिज को विस्तृत बनता है इस दृष्टिकोण के अनुसार राजनीतिक इतिहास का अध्ययन आवश्यक है जिससे वह अनुमान लगाया जा सकता कि भूतकाल में अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का क्या स्वरूप था तथा उन्हें किस प्रकार सुलझाया गया है।ऐतिहासिक उपागम विभिन्न देशों के विशिष्ट विकास और परिवर्तन पर हमारा ध्यान केन्द्रित करता है, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के परिवर्तन क्रम को समझने में सहायता मिलती है।इस उपागम का मुख्य आधार है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों मे परिवर्तन राज्यों के विकास और परिवर्तन के साथ ही होता रहता है।अतः अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का समकालीन स्वरूप एक क्रमिक तथा दीर्ध विकास का फल है।

विधिवादी दृष्टिकोण के समर्थकों ने विधि के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को समझने का प्रयास किया।अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में विधि नियमों तथा इनके आधार पर स्थायी विश्व व्यवस्था का निर्माण विधिवादी दृष्टिकोण का उद्देश्य था।विधिवादी अन्तर्राष्ट्रीय कानून सन्धियाँ, राज्यों के मध्य विधि व्यवस्था, संविधानिक उपबंधों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अन्तरदृष्टि का विकास चाहते थे।इन्होंने विधि एवम् व्यवस्था के आधार पर विश्व निर्माण का सुझाव दिया।

ई.एच.कार.एल्फ्रेड जिमर्न,जाँर्ज शवर्जनबर्गर ,मार्टिन वाइट ,रेमां आरो जैसे कई विद्वानों ने परम्पावादी दृष्टिकोण के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय के अध्ययन का प्रयत्न किया।लेकिन हैडले बुल ने सन् *1996* में वैज्ञानिक प्रणाली को चुनौती देते हुए परम्पावादी उपागम को अपने अध्ययन का केन्द्र बनाया।बुल ने स्पष्ट कहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की विषय वस्तु का स्वरूप कुछ ऐसा है कि उसका अध्ययन वैज्ञानिक उपकरणों से नहीं किया जा सकताअन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का सम्बन्ध मूलतः नैतिक प्रश्नों से है।अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्येयता को प्रभुत्व सम्पन्न राज्यों की संरचना और उद्देश्य, उनके बीच होने वाले विवादों, युद्धों बल प्रयोग के औचित्य और अनौचित्य आदि प्रश्नों के हल ढूंढने होते है, अतः इतिहास और दर्शन का समीचीन अध्ययन किया जाना चाहिए।इतिहास और दर्शन से ही आत्मलोचन के साधन प्राप्त हो सकते हैं।डेविड वाइटल के शब्दों में- "परम्पावादी दृष्टिकोण के दो प्रमुख तत्त्व हैं-प्रणाली और विषय-वस्तु।प्रणाली के सामने मे परम्पावादी दृष्टिकोण इतिहास, विधिशास्त्र और दर्शन से सीखने और विवेक या निर्णय बुद्धि पर भरोसा करने को आवश्यक मानता है और विषय वस्तु के मामले में वह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों मे बल प्रयोग की भूमिका और राजनय के महत्व जैसे व्यापक प्रश्नों को विचारणीय मानता है।"

आगे, धन्यवाद।

2020-07-15
From vivo Note.

Scanned with CamScanner